Pro

Chapter 11

Hindi Interlinear

Reference: Hindi Easy-to-Read Version

1	מֹאזְנֵי	מִרְמָה	תּוֹעֲבַת	יְהוָה	וְאֶבֶן	שְׁלֵמָה	רְצוֹנוֹ׃	
	तराजू	धोखे-की	घृणा	यहोवा-के-लिए	और-पत्थर	पूरा	उसकी-प्रसन्नता	
	H3976	H4820	H8441	H3068	H0068	H8003	H7522	

यहोवा छल के तराजू से घृणा करता है, किन्तु उसका आनन्द सही नाप—तौल है।

2	בָּא־	זָדוֹן	וַיָּבֹא	קָלוֹן	וְאֶת־	צְנוּעִים	חָכְמָה׃	
	आता-है	अहंकार	और-आती-है	अपमान	और-साथ	नम्रों-के	बुद्धि	
	H0935	H2087	H0935	H7036	H0854		H2451	

अभिमान के संग ही अपमान आता है, किन्तु नम्रता के साथ विवेक आता है।

3	תֻּמַּת	יְשָׁרִים	תַּנְחֵם	וְסֶלֶף	בּוֹגְדִים	[ושדם]	(יְשָׁדֵם׃)	
	खराई	सीधों-की	चलाएगी-उन्हें	और-टेढ़ापन	विश्वासघातों-का	उजाड़ेगा	उन्हें	
	H8538	H3477	H5148	H5558	H0898	H7701	H7703	

नेकों की नेकी उनकी अगुवाई करती है, किन्तु दुष्टों को दुष्टता ही ले डूबेगी।

4	לֹא־	יוֹעִיל	חוֹן	בְּיוֹם	עֶבְרָה	וּצְדָקָה	תַּצִּיל	מִמָּוֶת׃
	नहीं	लाभ-देगा	धन	दिन-में	क्रोध-के	और-धार्मिकता	बचाती-है	मृत्यु-से
	H3808	H3276	H1952	H3117	H5678	H6666	H5337	H4194

कोप के दिन धन व्यर्थ रहता, काम नहीं आता है; किन्तु तब नेकी लोगों को मृत्यु से बचाती है।

5	צְדָקַת	תָּמִים	תְּיַשֵּׁר	דַּרְכּוֹ	וּבְרִשְׁעָתוֹ	יִפֹּל	רָשָׁע׃	
	धार्मिकता	खरे-की	सीधी-करती-है	मार्ग-को	और-दुष्टता-में	गिरेगा	दुष्ट	
	H6666	H8549	H3474	H1870	H7564	H5307	H7563	

नेकी निर्दोषों के हेतु मार्ग सरल—सीधा बनाती है, किन्तु दुष्ट जन को उसकी अपनी ही दुष्टता धूलें चटा देती।

6	צְדָקַת	יְשָׁרִים	תַּצִּילֵם	וּבְהַוַּת	בֹּגְדִים	יִלָּכְדוּ׃		
	धार्मिकता	सीधों-की	बचाएगी-उन्हें	और-लालसा-में	विश्वासघात	फँसेंगे		
	H6666	H3477	H5337	H1942	H0898	H3920		

नेकी सज्जनों को छुड़वाती है, किन्तु विश्वासहीन बुरी इच्छाओं के जाल में फँस जाते हैं।

7	בְּמוֹת	אָדָם	רָשָׁע	תֹּאבַד	תִּקְוָה	וְתוֹחֶלֶת	אוֹנִים	אָבָדָה׃
	मृत्यु-में	आदमी	दुष्ट	नाश-होती-है	आशा	और-प्रतीक्षा	शक्तिशाली-की	नाश-होती-है
	H4194	H0120	H7563	H0006		H8431	H0205	H0006

जब दुष्ट मरता है, उनकी आशा मर जाती है। अपनी शक्ति से जो कुछ अपेक्षा उसे थी, व्यर्थ चली जाती है।

8	צַדִּיק	מִצָּרָה	נֶחֱלָץ	וַיָּבֹא	רָשָׁע	תַּחְתָּיו׃		
	धर्मी	संकट-से	छुड़ाया-जाता-है	और-आता-है	दुष्ट	उसकी-जगह-में		
	H6662			H0935	H7563	H8478		

धर्मी जन तो विपत्ति से छुटकारा पा लेता है, जबकि उसके बदले वह दुष्ट पर आ पड़ती है।

9	בְּפֶה	חָנֵף	יַשְׁחֵת	רֵעֵהוּ	וּבְדַעַת	צַדִּיקִים	יֵחָלֵצוּ׃	
	मुँह-से	पाखंडी	नष्ट-करता-है	पड़ोसी-को	और-ज्ञान-से	धर्मी	छुड़ाए-जाते-हैं	
	H6310	H2611	H7843	H7453	H1847	H6662		

भक्तिहीन की वाणी अपने पड़ौसी को ले डूबती है, किन्तु ज्ञान द्वारा धर्मी जन तो बच निकलता है।

10 בְּטוּב צַדִּיקִים תַּעֲלֹץ קִרְיָה וּבַאֲבַד רְשָׁעִים רִנָּה׃
भलाई-में धर्मियों-की आनन्दित-होता-है नगर और-नाश-में दुष्टों-के जयजयकार
H2898 H6662 H5970 H7151 H0006 H7563 H7440

धर्मी का विकास नगर को आनन्दित करता जबकि दुष्ट का नाश हर्ष—नाद उपजाता।

11 בִּבְרָכַת יְשָׁרִים תָּרוּם קָרֶת וּבְפִי רְשָׁעִים תֵּהָרֵס׃
आशीष-से सीधों-की ऊँचा-होता-है नगर और-मुँह-से दुष्टों-के गिराया-जाता-है
H1293 H3477 H7176 H6310 H7563 H2040

सच्चे जन की आशीष नगर को ऊँचा उठा देती किन्तु दुष्टों की बातें नीचे गिरा देती हैं।

12 בָּז־לְרֵעֵהוּ חֲסַר־לֵב וְאִישׁ תְּבוּנוֹת יַחֲרִישׁ׃
तुच्छ-करता-है पड़ोसी-को रहित हृदय-के और-पुरुष समझ-वाला चुप-रहता-है
H0936 H7453 H2638 H0376 H8394

ऐसा जन जिसके पास विवेक नहीं होता, वह अपने पड़ोसी का अपमान करता है, किन्तु समझदार व्यक्ति चुप चाप रहता है।

13 הוֹלֵךְ רָכִיל מְגַלֶּה־סּוֹד וְנֶאֱמַן־רוּחַ מְכַסֵּה דָּבָר׃
चलनेवाला चुगलखोर प्रकट-करता-है भेद-को और-विश्वसनीय आत्मा-का ढाँकता-है बात-को
H1980 H7400 H1540 H5475 H0539 H7307 H3680 H1697

जो चतुरायी करता फिरता है, वह भेद प्रकट करता है, किन्तु विश्वासी जन भेद को छिपाता है।

14 בְּאֵין תַּחְבֻּלוֹת יִפֹּל־עָם וּתְשׁוּעָה בְּרֹב יוֹעֵץ׃
अभाव-में योजनाओं-के गिरेगा प्रजा और-उद्धार बहुतायत-में सलाहकारों-के
H0369 H8458 H5307 H3816 H8668 H7230 H3289

जहाँ मार्ग दर्शन नहीं वहाँ राष्ट्र पतित होता, किन्तु बहुत सलाहकार विजय को सुनिश्चित करते हैं।

15 רַע־יֵרוֹעַ כִּי־עָרַב זָר וְשֹׂנֵא תִּקְעֵים בּוֹטֵחַ׃
बुराई होगी जब जमानत-देता-है अजनबी-के-लिए और-घृणा-करनेवाला हाथ-मिलाने-के सुरक्षित-है
H7451 H3588 H6148 H2114 H8130 H8628 H0982

जो अनजाने का जामिन बनता है, वह निश्चय ही पीड़ा उठायेगा, किन्तु अपने हाथों को बंधक बनाने से जो मना कर देता है, वह सुरक्षित रहता है।

16 אֵשֶׁת־חֵן תִּתְמָךְ־כָּבוֹד וְעָרִיצִים יִתְמְכוּ־עֹשֶׁר׃
स्त्री अनुग्रह-वाली धारण-करती-है सम्मान-को और-बलशाली धारण-करते-हैं धन-को
H0802 H2580 H8551 H3519 H6184 H8551 H6239

दयालु स्त्री तो आदर पाती है जबकि क्रूर जन का लाभ केवल धन है।

17 גֹּמֵל נַפְשׁוֹ אִישׁ חָסֶד וְעֹכֵר שְׁאֵרוֹ אַכְזָרִי׃
भलाई-करनेवाला प्राण-को पुरुष दयालु और-दुःख-देनेवाला शरीर-को निर्दयी
H1580 H5315 H0376 H2617 H5916 H7607 H0394

दयालु मनुष्य स्वयं अपना भला करता है, जबकि दयाहीन स्वयं पर विपत्ति लाता है।

18 רָשָׁע עֹשֶׂה פְּעֻלַּת־שָׁקֶר וְזֹרֵעַ צְדָקָה שֶׂכֶר אֱמֶת׃
दुष्ट करता-है कार्य झूठे-का और-बोनेवाला धार्मिकता-को प्रतिफल सच्चाई-का
H7563 H6468 H8267 H2232 H6666 H7938 H0571

दुष्ट जन कपट भरी रोजी कमाता है, किन्तु जो नेकी को बोता रहता है, उसको तो सुनिश्चित प्रतिफल का पाना है।

19 כֵּן־צְדָקָה לְחַיִּים וּמְרַדֵּף רָעָה לְמוֹתוֹ׃
वैसे धार्मिकता जीवन-के-लिए और-पीछा-करनेवाला बुराई-का मृत्यु-के-लिए
H6666 H2222 H7291 H7451 H4194

सच्चा धर्मी जन जीवन पाता है, किन्तु जो बुराई को साधता रहता वह तो बस अपनी मृत्यु को पहुँचता है।

20

תּוֹעֲבַת	יְהוָה	עִקְּשֵׁי־	לֵב	וּרְצוֹנוֹ	תְּמִימֵי	דָרֶךְ׃
घृणा	यहोवा-के-लिए	टेढ़े	हृदय-के	और-प्रसन्नता-है	खरे	मार्ग-के
H8441	H3068	H6141		H7522	H8549	H1870

> कुटिल जनों से, यहोवा घृणा करता है किन्तु वह उनसे प्रसन्न होता है जिनके मार्ग सर्वदा सीधे होते हैं।

21

יָד	לְיָד	לֹא־	יִנָּקֶה	רָע	וְזֶרַע	צַדִּיקִים	נִמְלָט׃
हाथ	हाथ-से	नहीं	निर्दोष-होगा	दुष्ट	और-वंश	धर्मियों-का	बचेगा
H3027	H3027	H3808	H5352		H2233	H6662	H4422

> यह जोनो निश्चित है, दुष्ट जन कभी दण्ड से नहीं बचेगा। किन्तु जो नेक है वे छूट जायेंगे।

22

נֶזֶם	זָהָב	בְּאַף	חֲזִיר	אִשָּׁה	יָפָה	וְסָרַת	טָעַם׃
नथ	सोने-की	नाक-में	सूअर-की	स्त्री	सुन्दर	और-हटी-हुई	विवेक-से
H5141	H2091	H0639	H2386	H0802	H3303	H5493	H2940

> जो भले बुरे में भेद नहीं करती, उस स्त्री की सुन्दरता ऐसी है जैसे किसी सुअर की थुथनी में सोने की नथ।

23

תַּאֲוַת	צַדִּיקִים	אַךְ־	טוֹב	תִּקְוַת	רְשָׁעִים	עֶבְרָה׃
इच्छा	धर्मियों-की	केवल	भलाई	आशा	दुष्टों-की	क्रोध
H8378	H6662	H0389			H7563	H5678

> नेक की इच्छा का भलाई में अंत होता है, किन्तु दुष्ट की आशा रोष में फैलती है।

24

יֵשׁ	מְפַזֵּר	וְנוֹסָף	עוֹד	וְחוֹשֵׂךְ	מִיֹּשֶׁר	אַךְ־	לְמַחְסוֹר׃
है	बिखेरनेवाला	और-बढ़ता-है	और	और-रोकनेवाला	सीधाई-से	केवल	घटी-के-लिए
H3426	H6340	H3254	H5750	H2820	H3476	H0389	H4270

> जो उदार मुक्त भाव से दान देता है, उसका लाभ तो सतत बढ़ता ही जाता है, किन्तु जो अनुचित रूप से सहेज रखते, उनका तो अंत बस दरिद्रता होता।

25

נֶפֶשׁ־	בְּרָכָה	תְדֻשָּׁן	וּמַרְוֶה	גַּם־	הוּא	יוֹרֶא׃
प्राण	आशीष-का	मोटा-होगा	और-सींचनेवाला	भी	वह	सींचा-जाएगा
H5315	H1293	H1878	H7301	H1571	H1931	

> उदार जन तो सदा, फूलेगा फलेगा और जो दूसरों की प्यास बुझायेगा उसकी तो प्यास अपने आप ही बुझेगी।

26

מֹנֵעַ	בָּר	יִקְּבֻהוּ	לְאוֹם	וּבְרָכָה	לְרֹאשׁ	מַשְׁבִּיר׃
रोकनेवाला	अनाज-को	शाप-देते-हैं-उसे	लोग	और-आशीष	सिर-पर	बेचनेवाले-के
H4513			H3816	H1293		H7666

> अन्न का जमाखोर लोगों की गाली खाता, किन्तु जो उसे बेचने को राजी होता है उसके सिर वरदान का मुकुट से सजता है।

27

שֹׁחֵר	טוֹב	יְבַקֵּשׁ	רָצוֹן	וְדֹרֵשׁ	רָעָה	תְבוֹאֶנּוּ׃
खोजनेवाला	भलाई-को	ढूँढता-है	प्रसन्नता-को	और-खोजनेवाला	बुराई-को	आएगी-उस-पर
H7836		H1245	H7522	H1875		H0935

> जो भलाई पाने को जतन करता है वही यश पाता है किन्तु जो बुराई के पीछे पड़ा रहता उसके तो हाथ बस बुराई ही लगती है।

28

בּוֹטֵחַ	בְּעָשְׁרוֹ	הוּא	יִפֹּל	וְכֶעָלֶה	צַדִּיקִים	יִפְרָחוּ׃
भरोसा-करनेवाला	धन-पर	वह	गिरेगा	और-जैसे-पत्ते	धर्मी	फूलेंगे
H0982	H6239	H1931	H5307	H5929	H6662	

> जो कोई निज धन का भरोसा करता है, झड़ जायेगा वह निर्जीव सूखे पत्ते सा; किन्तु धर्मी जन नयी हरी कोपल सा हरा—भरा ही रहेगा।

29

עוֹכֵר	בֵּיתוֹ	יִנְחַל־	רוּחַ	וְעֶבֶד	אֱוִיל	לַחֲכַם־	לֵב׃
दुःख-देनेवाला	घर-को	उत्तराधिकारी-होगा	हवा-का	और-दास	मूर्ख	बुद्धिमान	हृदय-के
H5916		H5157	H7307	H5650	H0191	H2450	

> जो अपने घराने पर विपत्ति लायेगा, दान में उसे वायु मिलेगा और मूर्ख, बुद्धिमान का दास बनकर रहेगा।

30

פְּרִי־	צַדִּיק	עֵץ	חַיִּים	וְלֹקֵחַ	נְפָשׁוֹת	חָכָם׃
फल	धर्मी-का	वृक्ष	जीवन-का	और-जीतनेवाला	प्राणों-को	बुद्धिमान
H6529	H6662	H6086		H3947	H5315	H2450

> धर्मी का कर्म—फल “जीवन का वृक्ष” है, और जो जन मनों को जीत लेता है, वही बुद्धिमान है।

31

הֵן	צַדִּיק	בָּאָרֶץ	יְשֻׁלָּם	אַף	כִּי־	רָשָׁע	וְחוֹטֵא׃
देखो	धर्मी	देश-में	प्रतिफल-पाता-है	कितना-अधिक	कि	दुष्ट	और-पापी
H2005	H6662	H0776		H0637		H7563	H2398

> यदि इस धरती पर धर्मी जन अपना उचित प्रतिफल पाते हैं, तो फिर पापी और परमेश्वर विहीन लोग कितना अपने कुकर्मों का फल यहाँ पायेंगे।